वर्ष 10, अंक 117

सहयोग शुल्क : रु.1 / जुलाई 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेषभाई

"दिव्यांग शक्ति वह प्रेरणा है, जो हर चुनौती को आत्मविश्वास और संकल्प से जीतना सिखाती है।"

(प .पू .संतश्री सदगुरु ॐऋषि स्वामी)

"दिव्यांगता कमजोरी नहीं, बल्कि अद्भुत शक्ति, प्रतिभा और आत्मबल का प्रतीक है।

(प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रलपाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदनपत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

समाज में अक्सर दिव्यांगता को कमजोरी के रूप में देखा जाता है, जबकि वास्तव में दिव्यांगजन ईश्वर की विशेष शक्ति और अद्भुत आत्मबल का प्रतीक हैं। जब एक दिव्यांग भाई अपने नाखूनों से लिखकर जीवन की कठिनाइयों को चुनौती देता है, जब अल्पेश सुतरिया व्हीलचेयर पर बैठकर विश्व स्तर पर भारत का नाम रोशन करते हैं, और जब बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के चेहरे पर मैजिक शो के माध्यम से मुस्कान खिलती है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि सीमाएं शरीर में होती हैं, आत्मा में नहीं। दिव्यांगजन समाज पर बोझ नहीं हैं, बल्कि प्रेरणा के स्रोत हैं। आवश्यकता केवल उन्हें अवसर, सम्मान और प्रोत्साहन देने की है। यदि परिवार, समाज और शासन सकारात्मक सहयोग प्रदान करें, तो यही दिव्यांगजन शिक्षा, खेल, कला और सेवा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं। अल्पेश सुतरिया जैसे खिलाड़ी यह संदेश देते हैं कि "हौसलों के पंख हों तो व्हीलचेयर भी सफलता की उड़ान बन जाती है।" वहीं नाखून से लिखने वाले दिव्यांग भाई की कहानी हमें सिखाती है कि इच्छाशक्ति किसी भी शारीरिक कमी से बड़ी होती है। इसी प्रकार मैजिक शो जैसे आयोजन दिव्यांग बच्चों के जीवन में आनंद, आत्मविश्वास और सामाजिक अपनत्व का संचार करते हैं। दिव्यांग सेतु का उद्देश्य भी यही है कि समाज में संवेदनशीलता और समरसता का वातावरण बने। हमें दिव्यांगजनों को दया नहीं, बल्कि समान अवसर और सम्मान देना होगा। हर दिव्यांग व्यक्ति के भीतर कोई न कोई विशेष प्रतिभा छिपी होती है, जिसे पहचानने और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी पूरे समाज की है।आइए, हम सब मिलकर ऐसा भारत बनाएं जहां दिव्यांगजन किसी सहारे के नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास के बल पर सफलता की नई पहचान बनें। यही सच्ची मानव सेवा और सामाजिक समरसता का मार्ग है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जुलाई 2026, पृष्ठ संख्या – 16

वर्ष – 10 | अंक – 117

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८

प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट(NGO)

Trust Reg. No.: E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉट के सामने, नया

विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००७

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट ने दिव्यांग बच्चों के लिए रचा खुशियों का जादुई संसार

समाज में दिव्यांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता, सम्मान और सकारात्मक सोच विकसित करने के उद्देश्य से ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के लिए एक विशेष प्रेरणादायी मैजिक शो का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल मनोरंजन प्रदान करना नहीं, बल्कि बच्चों के जीवन में खुशियाँ, आत्मविश्वास और अपनत्व का संचार करना था।

मैजिक शो बच्चों के लिए हमेशा आकर्षण का केंद्र रहा है। रंग-बिरंगे मंच, रोमांचक जादुई प्रस्तुतियाँ और मनोरंजक वातावरण ने बच्चों के चेहरे पर मुस्कान बिखेर दी। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ प्रत्येक प्रस्तुति का आनंद लिया। कई बच्चों को मंच पर आमंत्रित कर जादुई प्रस्तुतियों का हिस्सा भी बनाया गया, जिससे उनके भीतर आत्मविश्वास और उत्साह का संचार हुआ। यह आयोजन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं था, बल्कि दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का एक सुंदर प्रयास भी था। कार्यक्रम में बच्चों तथा उनके अभिभावकों के लिए विशेष व्यवस्थाएँ की गईं। बच्चों के लिए नाश्ते की व्यवस्था भी की गई, जिससे पूरा वातावरण एक पारिवारिक उत्सव जैसा बन गया।

ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट का उद्देश्य केवल सहायता प्रदान करना नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सम्मानपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है। संस्था द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रम समाज में जागरूकता बढ़ाने तथा दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस सेवा कार्य के पीछे परम पूज्य संत श्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी जी की प्रेरणा और मानव सेवा का भाव जुड़ा हुआ है। उनकी प्रेरणा से संस्था निरंतर ऐसे कार्यों के माध्यम से समाज में करुणा, समरसता और सेवा की भावना को सशक्त बना रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति दिव्यांग बच्चों को समान अवसर, सम्मान और प्रोत्साहन प्रदान करने में अपनी सहभागिता निभाए। जब समाज संवेदनशील बनता है, तभी एक समावेशी और सकारात्मक भविष्य का निर्माण संभव होता है। यह प्रेरणादायी मैजिक शो केवल जादू का प्रदर्शन नहीं, बल्कि बच्चों के जीवन में खुशियों, आत्मविश्वास, प्रेम और सामाजिक अपनत्व का सुंदर उत्सव बन गया। बच्चों की मुस्कान ही इस आयोजन की सबसे बड़ी सफलता और संस्था के सेवा संकल्प की सच्ची पहचान बनी।

स्मित चाइल्ड एजुकेशन एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष योग शिविर का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अहमदाबाद के नारायणपुरा स्थित स्मित चाइल्ड एजुकेशन एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष योग एवं प्रेरणा शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें स्वस्थ एवं आत्मनिर्भर जीवन की दिशा में प्रेरित करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्र एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इसके पश्चात योग प्रशिक्षकों द्वारा बच्चों को सरल एवं प्रभावी योगासन तथा प्राणायाम का अभ्यास कराया गया। योग सत्र के दौरान बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाने का संदेश प्राप्त किया। इस अवसर पर अतिथियों ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी बच्चों को गुजरात दधीचि लोक कल्याण ट्रस्ट, अहमदाबाद के सहयोग से स्कूल बैग एवं अन्य उपयोगी सामग्री भेंट की गई। साथ ही सभी बच्चों, अभिभावकों एवं अतिथियों के लिए भोजन की भी व्यवस्था की गई।

गायत्री परिवार, जोगीपुरा एवं सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त प्रयास से आयोजित यह कार्यक्रम सेवा, संस्कार और सामाजिक समर्पण का प्रेरणादायी उदाहरण बना। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के परिजन, आमंत्रित अतिथि एवं अभिभावक उपस्थित रहे और सभी ने दिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर सहयोग का संकल्प व्यक्त किया।

नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट ने दिव्यांग बच्चों की प्रतिभा को दी नई पहचान

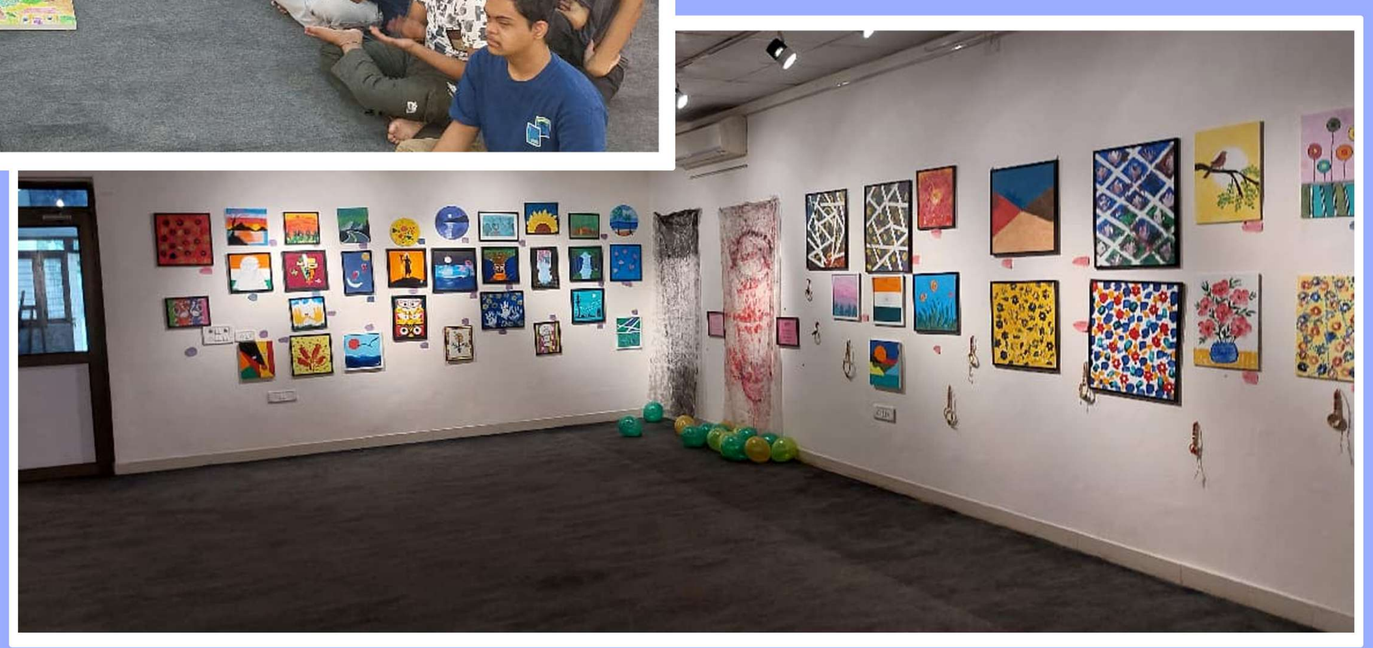

प्रतिभा किसी भी परिस्थिति या सीमा की मोहताज नहीं होती। आवश्यकता केवल उसे पहचानने, प्रोत्साहित करने और अभिव्यक्ति का अवसर देने की होती है। समाज में अक्सर मनोदिव्यांग बच्चों को केवल विशेष देखभाल की आवश्यकता वाले बच्चों के रूप में देखा जाता है, जबकि उनके भीतर भी अद्भुत कल्पनाशक्ति, रचनात्मकता और संवेदनाओं का संसार छिपा होता है। जब उन्हें सही मार्गदर्शन और अनुकूल वातावरण मिलता है, तब वे अपनी कला और प्रतिभा से सभी को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

इसी प्रेरणादायी सोच को साकार करते हुए नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित समर कैंप के अंतर्गत पिछले तीन वर्षों से संचालित आर्ट वर्कशॉप में तैयार की गई कलाकृतियों की भव्य प्रदर्शनी शहर की जोधपुर आर्ट गैलरी में आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी 31 मई से 6 जून तक प्रतिदिन दोपहर 3:00 बजे से 6:00 बजे तक आयोजित हुई, जिसमें कला प्रेमियों, अभिभावकों और शहर के अनेक नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

इस विशेष प्रदर्शनी में 44 मनोदिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा तैयार की गई 180 से अधिक पेंटिंग्स प्रदर्शित की गईं। प्रत्येक चित्र विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, रंगों की समझ और उनके आत्मविश्वास की जीवंत अभिव्यक्ति था। प्रदर्शनी में कैनवस पेंटिंग तथा पेपर पेंटिंग दोनों प्रकार की कलाकृतियों को स्थान दिया गया था, जिनमें प्रकृति, पर्यावरण, परिवार, पशु-पक्षी, भारतीय संस्कृति, मानवता और रंगों की दुनिया जैसे अनेक विषयों को अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया।

इन कलाकृतियों को देखकर यह अनुभव हुआ कि मनोदिव्यांग विद्यार्थी भी अपनी भावनाओं को कला के माध्यम से उतनी ही प्रभावशाली अभिव्यक्ति दे सकते हैं जितना कोई अन्य कलाकार। उनकी प्रत्येक रचना आत्मविश्वास, धैर्य और सृजनात्मक सोच का सुंदर उदाहरण थी।

इस आर्ट वर्कशॉप को सफल बनाने में अनेक प्रतिष्ठित कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हंसाबेन पटेल, कृतिकाबेन प्रजापति, वर्षाबेन पटेल, वर्षाबेन पंचोली, नयनाबेन मेवाड़ा, रमेशभाई हालारी तथा हसमुखभाई रावल ने निरवार्थ भाव से विद्यार्थियों को पक्षक दिवा से निस्बार्थ भाव से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया। उन्होंने केवल चित्रकला की तकनीक ही नहीं सिखाई, बल्कि बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसे आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त करने की प्रेरणा भी दी।

प्रदर्शनी में आने वाले प्रत्येक दर्शक ने विद्यार्थियों की कला की मुक्त कंठ से सराहना की। यह प्रदर्शनी केवल चित्रों का प्रदर्शन नहीं थी, बल्कि समाज को संवेदनशीलता, समानता और सकारात्मक दृष्टिकोण का संदेश देने वाला एक प्रभावशाली माध्यम भी बनी।नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट वर्षों से मनोदिव्यांन बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, कला, संस्कार और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहा है।

संस्था का विश्वास है कि प्रत्येक बच्चा विशेष है और प्रत्येक प्रतिभा को उचित मंच मिलना चाहिए। इसी विश्वास के साथ संस्था समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करती है, जो बच्चों के आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयों प्रदान करते हैं। यह कला प्रदर्शनी केवल रंगों और चित्रों का उत्सव नहीं थी, बल्कि यह उन सपनों, भावनाओं और संभावनाओं का उत्सव थी, जो प्रत्येक मनोदिव्यांन विद्यार्थी के भीतर जीवित हैं। ऐसे आयोजन समाज को यह प्रेरणा देते हैं कि यदि प्रेम, विश्वास और अवसर मिलें, तो हर व्यक्ति अपनी प्रतिभा से दुनिया को रंगों से भर सकता है।

अल्पेश सुतरिया : व्हीलचेयर से विश्व विजय तक का अदम्य सफर

भारत की धरती पर ऐसे अनेक व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने कठिन परिस्थितियों को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाया है। संघर्ष, आत्मविश्वास और निरंतर परिश्रम के बल पर उन्होंने समाज के सामने ऐसी प्रेरणा प्रस्तुत की है, जो लाखों लोगों को आगे बढ़ने का साहस देती है। गुजरात के भावनगर निवासी अंतरराष्ट्रीय पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी अल्पेश सुतरिया भी ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्वों में से एक हैं। पोलियो के कारण 80 प्रतिशत शारीरिक दिव्यांगता होने के बावजूद उन्होंने कभी अपने सपनों से समझौता नहीं किया। खेल के मैदान से लेकर सरकारी सेवा तक उन्होंने यह सिद्ध किया कि दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत के सामने कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

बोटाद जिले के झमराला गांव में जन्मे अल्पेशभाई का बचपन सामान्य ग्रामीण परिवेश में बीता। मात्र तीन वर्ष की आयु में पोलियो ने उनके जीवन को चुनौतीपूर्ण बना दिया, लेकिन उन्होंने इसे अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने शिक्षा जारी रखी और स्वयं को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने SSC परीक्षा उत्तीर्ण कर भारतीय डाक विभाग में पोस्टल असिस्टेंट के रूप में सेवा शुरू की। वर्तमान में वे भावनगर में कार्यरत हैं। सरकारी नौकरी के साथ अंतरराष्ट्रीय खेल की तैयारी करना उनके अनुशासन और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है। टेबल टेनिस जैसे चुनौतीपूर्ण खेल में व्हीलचेयर पर बैठकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचना उनकी असाधारण उपलब्धि है। लगातार अभ्यास, फिटनेस और अटूट संकल्प के बल पर उन्होंने विश्व मंच पर अपनी अलग पहचान बनाई और यह साबित कर दिया कि हौसले किसी भी शारीरिक सीमा से कहीं अधिक शक्तिशाली होते हैं।

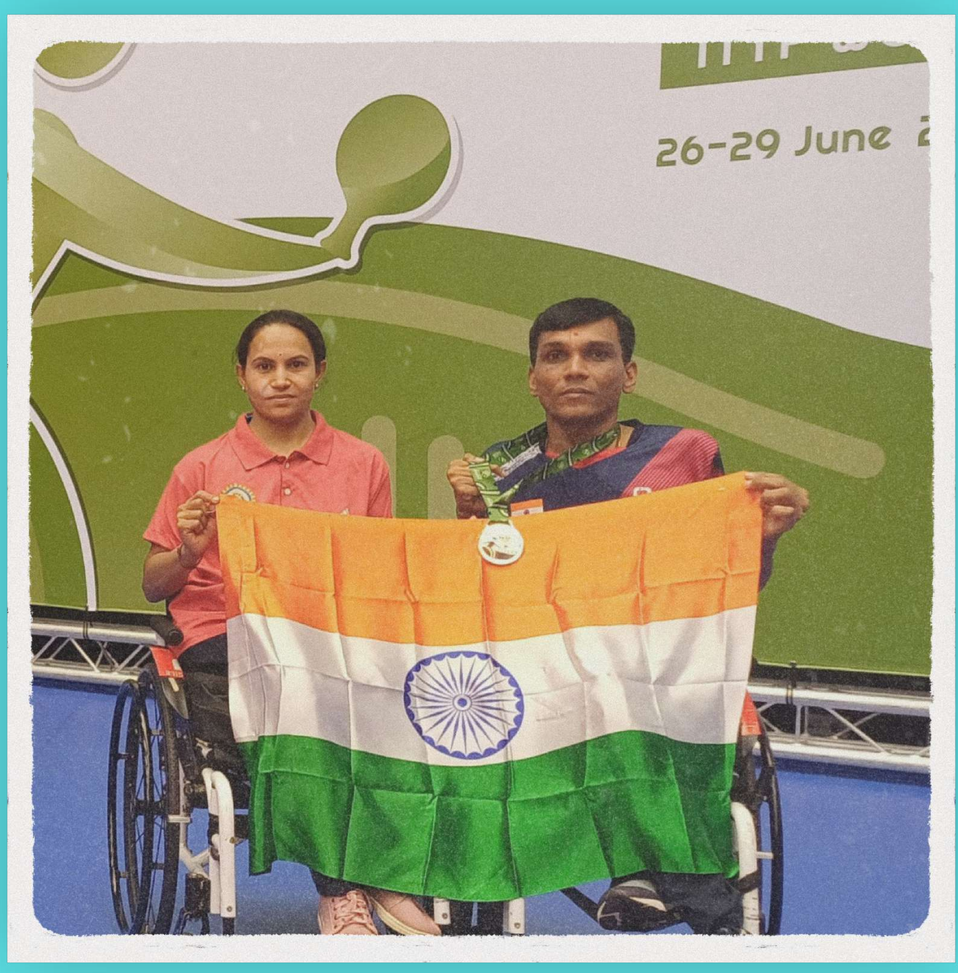

वोइस टू दिव्यांग

वर्ष 2023 में इजिप्ट के गीजा शहर में आयोजित ITTF पैरा ओपन प्रतियोगिता में उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीतकर भारत का नाम रोशन किया। इसके बाद वर्ष 2025 में ताइपेई में आयोजित ITTF वर्ल्ड पैरा फ्यूचर चैंपियनशिप में कांस्य पदक प्राप्त कर एक और उपलब्धि अपने नाम की। इस प्रतियोगिता में उन्होंने विश्व स्तरीय खिलाड़ियों को हराकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

इसके अतिरिक्त खेलो इंडिया पैरा गेम्स तथा अनेक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल जीतकर गुजरात का गौरव बढ़ाया। उनकी उपलब्धियां केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक दिव्यांग खिलाड़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

अल्पेश सुतरिया की पत्नी संगीता सुतरिया भी प्रतिष्ठित पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी हैं और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीत चुकी हैं। उनके पुत्र वंदन भी खेल प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं और भविष्य में भारत का प्रतिनिधित्व करने का सपना देख रहे हैं। यह परिवार वास्तव में "फैमिली ऑफ चैंपियंस" का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अल्पेशभाई केवल एक खिलाड़ी नहीं, बल्कि हजारों दिव्यांग युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वे नियमित रूप से युवाओं का मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें यह विश्वास दिलाते हैं कि दिव्यांगता किसी की क्षमता को सीमित नहीं करती। उनके प्रयासों से कई युवा आज पैरा स्पोर्ट्स में आगे बढ़ रहे हैं और अपने सपनों को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

उनकी सफलता यह संदेश देती है कि जीवन में परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहे तो सफलता निश्चित रूप से उसके कदम चूमती है। उनका संघर्ष और उपलब्धियां समाज में सकारात्मक सोच विकसित करने के साथ-साथ दिव्यांगजनों के प्रति सम्मान और विश्वास की भावना भी मजबूत करती हैं।

अपने उत्कृष्ट योगदान और उपलब्धियों के लिए अल्पेश सुतरिया को अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उन्हें वर्ष 2021 में दिव्यांग भारत रत्न अवॉर्ड, वर्ष 2010 तथा वर्ष 2017 में दिव्यांग श्रेष्ठ कर्मचारी अवॉर्ड सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। ये सम्मान उनके संघर्ष, अनुशासन और समर्पण की सच्ची पहचान हैं।

आज अल्पेश सुतरिया केवल एक अंतरराष्ट्रीय पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी नहीं, बल्कि संघर्ष, साहस, आत्मविश्वास और सफलता की जीवंत प्रेरणा हैं। उनका जीवन हर उस व्यक्ति के लिए आशा की किरण है जो कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है। वे यह संदेश देते हैं कि शरीर की सीमाएं कभी भी सपनों की उड़ान को रोक नहीं सकतीं। जब हौसले बुलंद हों, लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत निरंतर हो, तब सफलता स्वयं व्यक्ति के कदम चूमती है।

उनकी उपलब्धियाँ यह भी साबित करती हैं कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की क्षमता का मापदंड नहीं होती। सही अवसर, निरंतर अभ्यास और अटूट विश्वास के साथ हर व्यक्ति अपनी अलग पहचान बना सकता है। उन्होंने न केवल देश का गौरव बढ़ाया है, बल्कि हजारों दिव्यांग युवाओं के मन में यह विश्वास भी जगाया है कि सपने देखने और उन्हें साकार करने का अधिकार सभी को समान रूप से है।

अल्पेश सुतरिया की प्रेरणादायी यात्रा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसी मिसाल है, जो यह विश्वास जगाती है कि सच्ची जीत परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि अपने हौसलों, आत्मविश्वास और कर्मठता पर निर्भर करती है। उनका जीवन हम सभी को यह संदेश देता है कि जीतने के लिए मजबूत शरीर नहीं, बल्कि मजबूत इरादों की आवश्यकता होती है।

अल्पेश सुतरिया कहते हैं—
"व्हीलचेयर मेरे लिए सीमा नहीं, बल्कि मेरे सपनों तक पहुंचने का साधन है।"
यह केवल एक प्रेरक वाक्य नहीं, बल्कि उनके पूरे जीवन का सार है। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया है कि यदि व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास, मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति हो, तो कोई भी बाधा सफलता की राह नहीं रोक सकती।

नाखूनों से लिखी सफलता की प्रेरणादायी कहानी

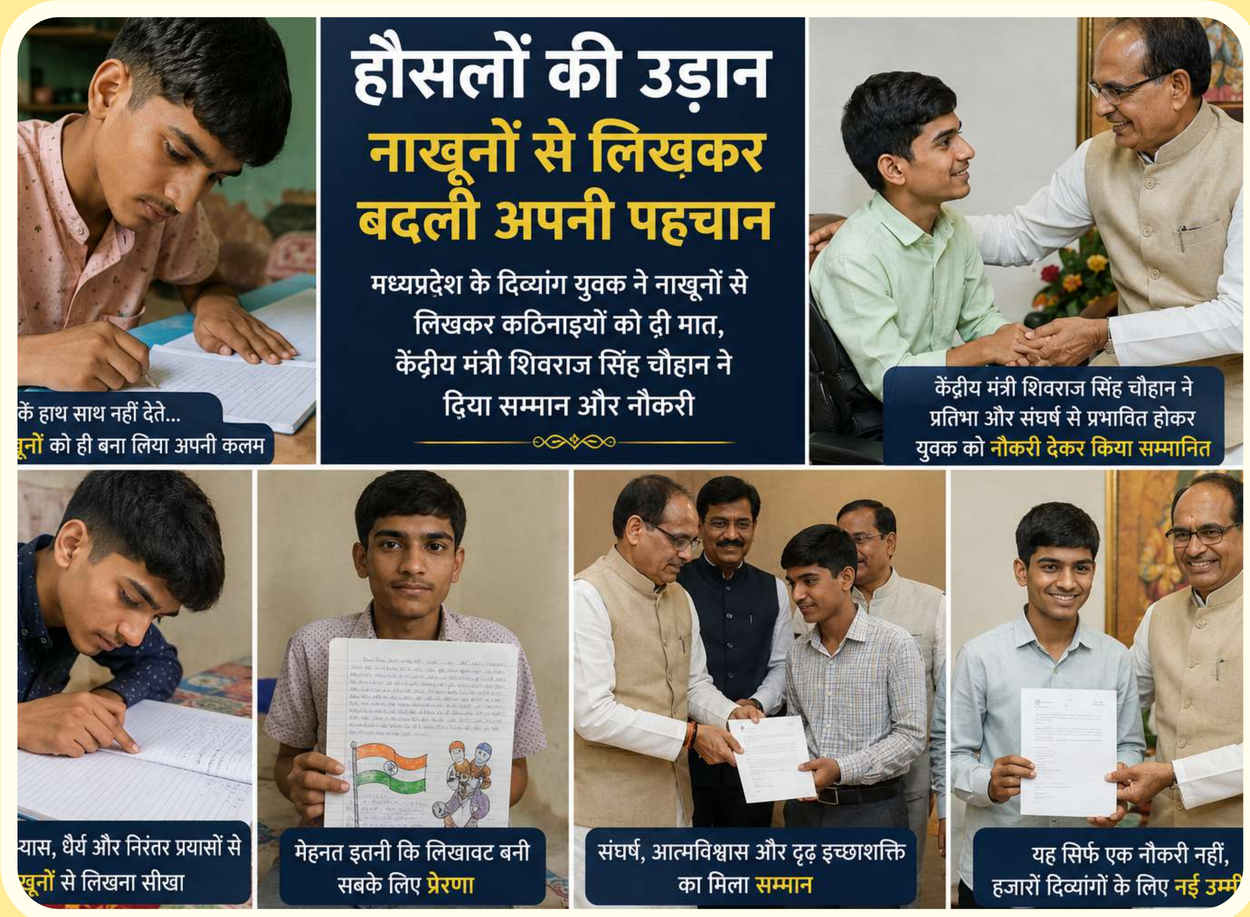

मध्यप्रदेश के एक दिव्यांग युवक की प्रेरणादायी कहानी आज पूरे देश के लिए मिसाल बन चुकी है। जिनके हाथ सामान्य रूप से कार्य नहीं करते, उन्होंने हार मानने के बजाय अपने नाखूनों को ही अपनी ताकत बना लिया। कठिन अभ्यास, धैर्य और अटूट आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने नाखूनों से लिखना सीखा और शिक्षा की कठिन राह को सफलतापूर्वक पार किया।

उनकी मेहनत, लगन और संघर्ष की कहानी धीरे-धीरे लोगों तक पहुँची। जब केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उनके अद्भुत साहस और आत्मबल के बारे में जाना, तो वे अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने युवक को नौकरी प्रदान कर सम्मानित किया और यह प्रेरणादायी संदेश दिया कि दिव्यांगजनों को केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि समान अवसर, विश्वास और सम्मान मिलना चाहिए। समाज का प्रत्येक वर्ग यदि उनके साथ खड़ा हो, तो वे भी अपनी प्रतिभा के बल पर नई ऊँचाइयों को छू सकते हैं।

आज यह युवक लाखों दिव्यांगजनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिनाइयाँ व्यक्ति को रोकने के लिए नहीं, बल्कि उसे और अधिक मजबूत बनाने के लिए आती हैं। सफलता पाने के लिए केवल स्वस्थ शरीर ही नहीं, बल्कि मजबूत इच्छाशक्ति, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है।

उनकी उपलब्धि यह भी सिद्ध करती है कि जब परिवार, समाज और शासन का सहयोग साथ हो, तब दिव्यांगजन शिक्षा, रोजगार, खेल, कला, विज्ञान, तकनीक और प्रशासन जैसे प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान स्थापित कर सकते हैं। उनकी प्रेरणादायी यात्रा हमें यह विश्वास दिलाती है कि प्रतिभा किसी शारीरिक सीमा की मोहताज नहीं होती। आवश्यकता केवल सही अवसर, उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की है। ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्व समाज में सकारात्मक सोच का निर्माण करते हैं और हमें यह संदेश देते हैं कि दृढ़ संकल्प के सामने कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण पुरस्कार: समावेशी समाज की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल

भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किया जाने वाला राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण पुरस्कार देश के दिव्यांगजनों तथा उनके सशक्तिकरण के लिए कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को दिया जाने वाला सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है। यह पुरस्कार केवल उपलब्धियों का सम्मान नहीं, बल्कि दिव्यांगजनों की प्रतिभा, आत्मविश्वास, संघर्ष और समाज में उनके महत्वपूर्ण योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का एक सशक्त माध्यम भी है। वर्ष 2026 के लिए भी इस प्रतिष्ठित पुरस्कार हेतु आवेदन और नामांकन प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है।

इन पुरस्कारों का उद्देश्य समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करना तथा उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना है। भारत सरकार के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD) द्वारा इसका आयोजन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष 3 दिसंबर, अंतरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति अथवा अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा यह सम्मान प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण पुरस्कार के अंतर्गत अनेक श्रेणियां निर्धारित की गई हैं। इनमें श्रेष्ठ दिव्यांग कर्मचारी, श्रेष्ठ खिलाड़ी, श्रेष्ठ कलाकार, श्रेष्ठ सृजनशील बालक-बालिका, दिव्यांगजनों के लिए कार्य करने वाली श्रेष्ठ संस्था, श्रेष्ठ नियोक्ता, पुनर्वास विशेषज्ञ, शिक्षक, समाजसेवी तथा नवाचार एवं सहायक तकनीक के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को सम्मानित किया जाता है।

इन पुरस्कारों का उद्देश्य केवल सम्मान देना नहीं, बल्कि उन प्रेरणादायी कहानियों को पूरे देश के सामने लाना भी है, जिन्होंने अपने संघर्ष और उपलब्धियों से समाज में नई सोच विकसित की है।

इन पुरस्कारों के लिए पात्रता का मुख्य आधार समाज में सकारात्मक योगदान और उत्कृष्ट उपलब्धियां हैं। ऐसे दिव्यांगजन जिन्होंने शिक्षा, खेल, कला, साहित्य, विज्ञान, प्रशासन, उद्यमिता या अन्य किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की हो, वे आवेदन कर सकते हैं। इसके साथ ही दिव्यांगजनों के लिए कार्यरत गैर-सरकारी संस्थाएं, सरकारी विभाग, निजी कंपनियां, शैक्षणिक संस्थान तथा सामाजिक संगठन भी अपने नामांकन प्रस्तुत कर सकते हैं।

वर्ष 2026 के लिए आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन रखी गई है। आवेदनकर्ता को अपनी उपलब्धियों, प्रमाणपत्रों, अनुभव तथा संबंधित दस्तावेजों के साथ निर्धारित पोर्टल पर आवेदन करना होता है। चयन प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक आवेदन का विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है, जिससे वास्तव में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित हो सके।

ऑनलाइन आवेदन और नामांकन प्रक्रिया 15 मई 2026 से प्रारंभ हो चुकी है, जबकि आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 निर्धारित की गई है। इच्छुक उम्मीदवार एवं संस्थाएं समय सीमा के भीतर आवेदन कर इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान का हिस्सा बन सकते हैं।

यह पुरस्कार केवल उपलब्धियों को सम्मानित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में समावेशिता, समान अवसर और आत्मनिर्भरता के विचार को भी मजबूत करता है। यह उन लोगों को राष्ट्रीय पहचान देता है जिन्होंने अपने कार्यों से यह सिद्ध किया है कि दिव्यांगता किसी भी प्रतिभा की सीमा नहीं बन सकती।

राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण पुरस्कार समाज को यह संदेश देता है कि यदि अवसर, सहयोग और विश्वास मिले, तो दिव्यांगजन भी शिक्षा, खेल, कला, विज्ञान, तकनीक, प्रशासन और उद्यमिता सहित प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे सकते हैं। आज भारत के अनेक दिव्यांग खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का नाम रोशन कर रहे हैं, वहीं कई युवा शिक्षा, नवाचार, तकनीक और सामाजिक नेतृत्व के क्षेत्र में नई मिसाल कायम कर रहे हैं।

ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्वों और संस्थाओं को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित कर यह पुरस्कार समाज के सामने सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है। इससे न केवल सम्मानित होने वाले व्यक्तियों का मनोबल बढ़ता है, बल्कि लाखों अन्य दिव्यांगजन भी अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित होते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज दिव्यांगजनों को सहानुभूति नहीं, बल्कि समान अवसर, सम्मान और प्रोत्साहन प्रदान करे। जब प्रतिभा को उचित मंच, विश्वास और पहचान मिलती है, तभी एक सशक्त, समावेशी और संवेदनशील भारत का निर्माण संभव होता है।

राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण पुरस्कार केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि उन अनगिनत संघर्षों, उपलब्धियों और सपनों का राष्ट्रीय अभिनंदन है, जो यह सिद्ध करते हैं कि सच्ची क्षमता व्यक्ति की सोच, आत्मविश्वास और कर्म में होती है, उसकी शारीरिक सीमाओं में नहीं।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

▲ DIVYANG KITE FESTIVAL ▲ SPORTS DAY CELIBRATION ▲ REPUBLIC DAY CELIBRATION ▲ HOLI CELIBRATION
▲ KIDS FASHION SHOW ▲ DRAWING COMPITITION ▲ WORLD ENVIRONMENT DAY ▲ DISABILITY AWARNESS CAMP
▲ ART & CRAFT WORK SHOP ▲ FUN & GAMES (MINUTE TO WIN IT) ▲ NAVRATRI CELIBRATION

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 7575876618

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर